भगतसिंह ने कहा

"लोगों को परस्पर लड़ने से रोकने के लिए वर्ग-चेतना की जरूरत है। गरीब मेहनतकश व किसानों को स्पष्ट समझा देना चाहिए कि तुम्हारे असली दुश्मन – पूंजीपति हैं, इसलिए तुम्हें इनके हथकंडों से बचकर रहना चाहिए और इनके हत्थे चढ़ कुछ न करना चाहिए। संसार के सभी गरीबों के, चाहे वे किसी भी जाति, रंग, धर्म या राष्ट्र के हों, अधिकार एक ही हैं। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम धर्म, रंग, नस्ल और राष्ट्रीयता व देश के भेदभाव मिटाकर एकजुट हो जाओ और सरकार की ताकत अपने हाथ में लेने का यत्न करो। इन यत्नों में तुम्हारा नुकसान कुछ नहीं होगा, इससे किसी दिन तुम्हारी जंजीरें कट जायेंगी और तुम्हें आर्थिक स्वतंत्रता मिलेगी।"

एक अपील

'आह्वान कैम्पस टाइम्स' सारे देश में चल रहे वैकल्पिक मीडिया के प्रयासों की एक कड़ी है। हम सत्ता प्रतिष्ठानों, फण्डिग एंजेंसियों, पूंजीवादी घरानों, एवं चुनावी राजनीतिक दलों से किसी भी रूप में आर्थिक सहयोग लेना घोर अनर्थकारी मानते हैं। जनता की वैकल्पिक मीडिया सिर्फ जन संसाधनों के बूते खड़ा किया जाना चाहिए—हमारी यह दृढ़ मान्यता है। अतः हम अपने सभी पाठकों–शुभचिन्तकों–सहयोगियों से अपील करते हैं कि वे अपनी ओर से अधिकतम संभव आर्थिक सहयोग भेजकर परिवर्तन के इस हथियार को मजबूती प्रदान करें।

साथियों

डाकदरों में वृद्धि के कारण इस अंक से हम पत्रिका की कीमत छह की जगह आठ रुपये करने को विवश हैं।

हमें विश्वास है आपका सहयोग बना रहेगा।

-सम्पादक

शिक्षा के प्रति जागरूक करें

'आहवान' के जनवरी-मार्च 2002 अंक को पढ़कर मैं काफी गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ। मेरे ख्याल से जिन लोगों के हाथों में यह सत्ता है, वे हमारे मुकाबले चार गुना आगे की सोचते हैं। हमारे कई लोग केवल रोटी की सोच तक ही सीमित हैं। इससे ज्यादा कुछ वे सोच नहीं पाते, हालात उनके खिलाफ हैं। इसलिए मेरा मानना है कि पहले शिक्षा के प्रति जागरूक करें और फिर आगे सोचें। भारत रत्न डॉ0 अम्बेडकर का कहना था, ''शिक्षित बनो, एक बनो, संघर्ष करो।'' मैं चाहता हूँ कि लोगों में केवल एक सोच हो कि मैं शिक्षित बनूं, क्योंकि इससे सोच में क्रान्ति आयेगी। मैं सोच या विचार की क्रान्ति ''जनक्रान्ति'' को सबसे बड़ी क्रान्ति मानता हूँ।

● मनीष कुमार पासवान, गोरखपुर

अपने हक के लिए आगे आओ !

सर्वप्रथम 'आहवान' जैसी बेलौस त्रैमासिक पत्रिका निकालने हेतु हार्दिक बधाइयाँ। जनवरी-मार्च 02 अंक में ''क्या तुम भविष्य की आवाज सुन रहे हो ?'' बहुत ही अच्छा लगा। पत्रिका वस्तुतः शहीद-ए-आजम भगतसिंह के विचारों का प्रतिनिधित्व करती है। वर्तमान देश में व्याप्त अराजकता, लूट-पाट, तानाशाही तथा तमाम अमानुषिक कृत्यों को रोकने के लिए 'आहवान' ने जो आवाज दी है, वह काफी प्रशंसनीय है। हमें संगठित होना है और तबाह कर देना है उन तानाशाहियों को जो देश में गरीबों, असहायों तथा नौजवानों का शोषण कर रही हैं। हमें आगे आना है अपने हक के लिए, अपनी आजादी के लिए जो पचास वर्ष बाद भी हमें हासिल नहीं है। हमें भगतसिंह के सपनों को पूरा करना है।

● निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर

मैं और हम

प्रत्येक चिन्तनशील युवक की ऐसी इच्छा होना स्वाभाविक ही है कि अपना देश विकास के पथ का अधिग्रहण कर विकसित बने। अर्थात् एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण जिसके छः स्तम्भ हों प्रत्येक को रोजगार, कपड़ा, रोटी, मकान शिक्षा, न्याय अर्थात् राष्ट्र में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति का समुचित विकास और इन सभी सुविधाओं से वंचित उस सर्वहारा वर्ग तक इन सुविधाओं को पहुँचाना। जो उनके अधिकार क्षेत्र में आते हुये भी उनसे इस कारण दूर हैं कि कुछ पूंजीवादी मानसिकता के लोगों द्वारा उनकी सुविधाओं का अधिग्रहण कर लिया गया है।

आज इसी चिन्तनशील युवा समाज द्वारा देश का विकास एक सकारात्मक दिशा में जा सकता है जिससे देश का विकास मानवता के मूल्यों पर हो सकता है। केवल भावना होने से या चिन्तन कर लेने मात्र से कार्य का सम्पादन हो जायेगा, यह यर्थाथता से उसी प्रकार परे है जिस प्रकार, चाँद प्राप्ति की बाल कल्पना। इसके लिए इस विचारशील युवा समाज को सर्वप्रथम अपने 'मैं' के चिन्तन को छोड़कर 'हम' के चिन्तन का विकास करना होगा। क्योंकि देशभक्ति की वह भावना, जिसकी नींव भगत सिंह, चन्द्रशेखर, अशफाक उल्ला खां, विवेकानन्द, सुभाषचन्द्र, राम प्रसाद बिस्मिल या उन अनगिनत अनजाने राष्ट्र के विकास के लिए अपने जीवन का प्रत्येक पल लगा देने वाले व्यक्तियों द्वारा रखी गयी 'मैं' की भावना के द्वारा तिरोहित हो जाती है। आज हमें क्रान्तिकारियों द्वारा प्रतिपादित उस पवित्र भावना को ही आगे बढ़ाना है और इस संघर्ष को एक नया मोड़ देकर सफलता का अभिनन्दन करना है।

अतः 'हम' और 'मैं' में अन्तर इस प्रकार बताया जा सकता है कि जन्म के लिए मेरा सम्बन्ध मेरे माता-पिता से है किन्तु जिस दिन मेरा नामकरण हुआ मैं समाज का अंग बन गया। मेरी बोलने की शक्ति विकसित हुई तो भाषा भी मुझे समाज से मिली। मातृभाषा प्राप्त हुई। बड़े हुए तो सभ्य बने इसका सम्बन्ध भी समाज से है, यानि समाज ने शिक्षा देकर बड़ा किया। यहाँ तक कि सुःख-दुःख की अनुभूतियाँ भी समाज ने दी अर्थात् प्रत्येक अवसर पर जीवन के प्रत्येक पल में समाज किसी न किसी रूप में उपस्थित रहा। इस समाज के साथ इतना गहरा सम्बन्ध स्थापित हो चुका है कि समाज के प्रति कर्तव्यों के निर्वहन से किसी भी प्रकार बचना एक प्रकार से उन भावनाओं का अनादर करना है, जो महान क्रान्तिकारियों द्वारा समाज को प्रदत्त की गयी।

अर्थात 'मैं' का चिन्तन केवल स्वंय का विकास दूसरों के दुःख की कीमत पर (पूंजीवादी अवधारणा) हमारी उस सम्पूर्ण भावना को तुरन्त ही तिरोहित कर देती है, जो इस देश तथा यहां की सम्पूर्ण जनता के विकास के लिये उत्तरदायी है अर्थात् वास्तविक राष्ट्रीय विकास, सामाजिक विकास।

अतः आज जब हम इस महान अवधारणा को यथार्थता में परिवर्तित करने के लिये एक क्रान्ति करने के लिये एकत्र हो रहे हैं, जो इस देश से समाज से अन्याय, भ्रष्टाचार और विषमता को मिटा दें। सबको काम का अधिकार

(पेज 8 पर जारी)

(पेज 4 से आगे)

विश्राम का अधिकार, मनोरंजन का अधिकार, शिक्षा का अधिकार दे सके तथा अक्षम लोगों का भरण पोषण कर सके। तब हमें 'हम' की अवधारणा में बंधना पड़ेगा और 'मैं' (पूंजीवादी मानसिकता) की अवधारणा से बाहर निकलना होगा। एक ऐसे चिन्तनशील युवकों के संगठन में बंधना होगा जहाँ 'हम' के द्वारा कार्यों का सिद्धान्तों का, प्रतिपादन और सम्पादन हो। अर्थात् प्रत्येक युवक को सशक्त बनाना होगा, उसके बौद्धिक स्तर को उठाना होगा उन्हें संगठन से जोड़ना होगा उन्हें अधिकारों के लिये लड़ना सिखाना होगा, अन्याय का प्रतिकार करें ऐसी क्षमता और भावना उनमें विकसित करनी होगी, भरनी होगी; स्वयं में भरनी होगी, विकसित करनी होगी।

आज हम ही भविष्य हैं, वर्तमान हैं हमारे द्वारा किया गया सामूहिक कार्य ही इस देश की सुप्त पड़ी जनता को जाग्रत कर सकती हैं ; जिनकी संवेदनायें हमारे आगे बढ़ने के लिये ढाल, अधिकार की भावना शस्त्र का कार्य करेगी और उनका साथ हमारे आन्दोलन को सफलता प्रदान करेगी। हम सभी साथ में चलकर, इस क्रान्ति को आगे बढ़ायेंगे जिसका नेतृत्व सामूहिक रूप में होगा। यहां पर कोई यह नहीं कहेगा कि तुम संघर्ष करो हम तुम्हारे साथ हैं, यहाँ सभी संघर्ष करेंगे और सभी साथ रहेंगे। इस सामूहिक भावना के द्वारा तथा उसको कार्य रूप में परिणित करके ही हम देश के ऋण से उऋण होंगे समाज के प्रति अपने दायित्वों की पूर्ति कर सकेंगे। यह क्रांति भ्रष्टाचार के खिलाफ, अन्याय के खिलाफ, अधिकार के प्रति, रोजगार के प्रति होगी; जिसका लक्ष्य केवल सफलता प्राप्त करना होगा।

अत: आज सम्पूर्ण युवा समाज से यह आहवान करता हूँ कि वो 'मैं' के चिन्तन को छोड़कर 'हम' के चिन्तन को आत्मसात करके संगठन को सक्रियता प्रदान करें, क्रान्ति के अग्रदूत बनें अधिकार की लड़ाई लड़े और वर्तमान समाज रचना, शासन तंत्र को बदलकर एक समतामूलक समाज का निर्माण करें जिससे सभी वर्गों को उनके जीने के लिये, आगे बढ़ने के लिये एक शक्तिशाली आधार मिले।

● सौरभ त्रिपाठी, नरही, लखनऊ

बहता है लहू.....

बहता है लहू देखिए मजहब के नाम पर,
हैवानियत का जोर है इंसान बेखबर।
आओ चलें हम साथ लें उनकी भी खबर,
दहशत के माहौल में छोड़े हुए जो घर।
उजड़ी हुई हैं बस्तियाँ वीरान है शहर,
बच्चे हैं भूखे देखिए राशन नहीं है घर।
करते हैं सारी जिन्दगी फुटपाथ पर बसर,
खुशियाँ मना रहे हैं वो लाशों के सौदागर।
इंसानियत के दुश्मनों को जानना होगा,
जानना ही नहीं पहचानना होगा।
आओ हमारे साथ बन जाओ हम सफर,
लुटेरे हुक्मरानों की हम लेंगे फिर खबर।
ये जंग है आजादी की मुश्किल है ये सफर,
आजादी के दीवानों की अन्तिम यही डगर।

● पुखराज निराला, मण्डीधनौरा(जे०पी०नगर)

देश हमारा, धरती अपनी, वे सच कहते हैं।
तब ही हम नीली छतरी के नीचे रहते हैं।
डाकू बैठ गये पहरे पर दीवारों का क्या,
घर के लुट जाने का हरदम खतरा सहते हैं।
दिखते तो हैं अच्छे लेकिन वीर शहीदों का,
कफन उन्होंने बेच दिया है साथी कहते हैं।
कितना ढूँढ़ा मगर एक भी सज्जन नहीं मिला,
लगता है इस बस्ती में कुछ नेता रहते हैं।
प्यासा भी ढूँढ़ेगा शीतल जल के स्रोत कहीं,
यों जग में गंदे नाले कितने ही बहते हैं।
मेरी खातिर 'माया ठगनी' अपने लिए नहीं,
इसी लिए वे महलों-सी कुटिया में रहते हैं।

● दीप चन्द्र निर्मोही, पानीपत

मुझे माफ करना

ऐ मेरी कविता मुझे माफ करना।
मैंने न सोचा था ऐसा भी होगा।।
सुना तो तुझे ये तेरा श्रम लेकिन।
समझा नहीं वो तेरा सार कविता।।
अच्छी लगी हो उसे ध्वनि तो क्या।
समझा तुझे बस केवल एक कविता।।
तूँ खुश है कि उसने तुझे है सुना,
रच कर तुझे मन दुखी है मेरा,
मन को तूँ उसके नहीं तार पायी,
हृदय का तूँ उसके नहीं पार पायी,
हृदय श्रम का था मलिन, है मलिन,
और मन की मेरे तूँ सरित-सार-सरिता।।
मैंने रचा था तुझे इस लिए की,
तूँ मनुज के मनों का उद्धार होगी,
उठेगा मनुज सुन तरंगो को तेरी,
समझकर तेरा गूढ़ उछलेगा फिर वो,
तोड़ देगा मन: बेड़ियों इन्द्रियों को,
उठ खड़ा होगा लंगड़ा कटे पैर पर फिर,
वाणी में उसके वो उद्गार होगा,
झुक जाएंगी फिर निगाहें युवा की,
और मन में विचरित एकता भाव होगा,
फिर लुटती हुई न वो औरत दिखेगी,
न लुटता हुआ ये मेरा देश कविता।।
मुझे दुख है कि अब ऐसा न होगा
मेरा मन सशंकित कि अब क्या-क्या होगा
यह मेरा दोष है कि तेरा दोष कविता
या इसमें है दुर्भाग्य फिर देश का
मुझे रोना आता है तुझ पर ऐ कविता
मुझे रोना आता है मुझ पर ऐ कविता
नहीं, अब नहीं, अब नहीं मैं लिखूंगा
लिखूंगा कभी फिर न यूं स्वच्छ कविता।।

● अतुल सिंह 'अजान',आजमगढ़

जेल में शहादत दिवस मनाया

सेण्ट्रल जेल बक्सर में बन्द क्रान्तिकारी साथियों की तरफ से हार्दिक लाल सलाम स्वीकार करें। 'आहवान' समय पर मिल गया। आभारी हैं। आपको यह जानकर खुशी होगी कि लम्बी समयावधि बाद केन्द्रीय कारागार, बक्सर में कुछ नौजवानों की पहल पर शहादत दिवस मनाया गया। 23 मार्च को शहादत दिवस मनाये जाने वाले स्थान को साफ-सुथरा कर कागज की रंगीन झंडियों से सजाया गया। साथ ही भगत सिंह की तस्वीर को आकर्षक ढंग से सजाया गया था। नौजवान संकल्प सभा के बैनर तले उपस्थित लगभग डेढ़ सौ बन्दियों द्वारा दो मिनट का मौन रख कर श्रद्धाँजलि अर्पित की गयी। इसके बाद पुष्पाँजलि दी गयी। मैंने शहीद गीत गाया तथा उनके जीवन पर विस्तारपूर्वक विचार रखे। सभाध्यक्ष मुझे चुना गया था, साथी राजू द्वारा मंच संचालन किया गया। साथी भान, सुवाष, शंकर, महेन्द्र, जिउत के द्वारा प्रस्तुत क्रान्तिकारी गीतों को बंदियों ने सराहा, क्योंकि ये जीवन से जुड़े हुए गीत थे। वक्ताओं द्वारा संकल्प सभा में इस बात पर बल दिया गया कि वर्तमान व्यवस्था को धवस्त कर भगत सिंह के अधूरे सपनों को पूरा करने के लिए, सच्ची आजादी के लिए उनके द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलना होगा। मेरे द्वारा प्रस्तुत वक्तव्य के अनुसार साम्राज्यवादियों के शोषण शासन के नये तरीकों के मुकाबले के लिए हमें नई जनवादी क्रान्ति की राहों पर आगे बढ़ना होगा।

● सुरेन्द्र पासवान, सेण्ट्रल जेल, बक्सर